RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-08
August-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI:https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i08.020

वर्तमान युग के युवाओं के लिए गाँधी विचारधारा की आवश्यकता

डॉ. पी. राजरत्नम

एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग, तमिलनाडु केंद्रीय विश्वविद्यालय, तिरुवारूर- 610005

युवा! तुम कालों के काल हो
तुम हो बहुत महान
तुम चाहो तो नाश हो
तुम चाहो तो निर्माण

किसी भी देश कीउन्नति का प्रमुखभार उनकेयुवकों पर होता है । देश का भार युवकों के कंधे ही उठा सकते हैं क्योंकि कि उनमें आत्मिक शक्ति कीभरमार होतीहै एवं वेप्रत्येक उत्तरदायित्व को सँभालने केयोग्य होते हैं । उनकीभुजाओं में साहस, शक्ति, शारीरिक बल, क्षमता आदि होती है । वे आक्रमणकारियों से देश की रक्षा कर ते हैं, चाहे वह विदेशी के आक्रमण ही क्यों न हो ।विपत्तियों के बादल मंडराते हों तबभीआगे बढ़ने वाले युवक ही हैं ।विवेकानन्द का कथन है :- तुम जानते हो जब-जब भारत के युवाओं ने ठाना है, आर्य भट्ट का उदय हुआ है । उनमें तन, मन, धन, से देश के लिए सब कुछ अर्पण करने की क्षमता रहती है । देश के लिए जीना मरना जानते हैं । देश के उत्थान के लिए शिक्षा का प्रचार–प्रसार, निरक्षरता मिटाने का प्रयत्न , अकाल, आपत्ति, बाढ़, आंधी, भूकंप, आदि के समय आगे आकर कार्य करने वाले युवक हीहैं ।

आज की जीवन शैली, जीवन स्तर, वातावरण गुणों को देखते समय ज्ञात होता है कि युवकों में उपयुक्त गुणों को और आगे बढ़ने की आवश्यकता है ।चारों तरफ से खतरा घिरा हुआ है । इसलिए युवकों का जागना जरूरी है और इनके जागने से ही देशजागेगा ।महात्मा गाँधी ने जो जीवन शैली अपनाई , जो विचार अभिव्यक्त किये उन्हेंअपनाने से देश और आगे बढ़ेगा खासकर युवाओं को एक अनोखी शक्ति एवं प्रेरणा मिलेगी। गाँधी जी की विचारधाराओं में विशेषकर धैर्य, बल, क्षमता, आत्मबलिदान देश वासियों के प्रति चिंता, प्रयत्न, कला कौशल एवं दस्तकारी की रक्षा अनुशासन, सदाचार, सेवा भाव, सत्य, अहिंसा, समाज सुधार, सांप्रदायिकता का विरोध, एकता, मानवतावाद, त्याग भावना, विश्व बंधुत्व की भावना, प्रेम भावना, वर्ण भेद, जाति धर्म आदि से दूर रहना, व्यक्तित्व का निर्माण करना तथा हिंसा, प्रतिशोध, शोषण, घृणा आदि से दूर रह ना शामिल है। इसे अपनाकर देश का भविष्य और ऊँचा होगा । उक्त विचारधाराओं पर विचार करेंगे तो युवकों को मालूम होगा की वे कहाँ हैं ।

गाँधी जी के कठिन कार्यों, संघर्षों, विषम एवं विशेष साहसों से परिपूर्ण दीर्घ जीवन में कोई भी ऐसा स्वर नहीं निकला जो बेसुरा लगे । उनकी विविध प्रवृत्तियोंमेंआश्चर्यजनक एकरसता भरी थी जिसमें उनके मुंह से निकला हुआ प्रत्येक शब्द एवं कार्य ठीक प्रकार से सज जाता था सारी दुनिया उन्हें मानती थी, इसलिए तो नेहरू जी कहते हैं उनकी बात सुनते हुए ,उन्हें देखते हुए लोगउनके बाह्य शरीर को देखना ही भूल जाते थे ।जहाँ वे बैठते थे वह स्थान मंदिर के सामान पवित्र बन जाता था और जहाँ वे चलते थे वह मार्ग पूजा की जगह बन जाता था, इससे हम गाँधी जी के विशाल व्यक्तित्व का अनुमान लगा सकते हैं । आज के युवक नहीं बल्कि हम सब को इसी प्रकार के व्यक्तित्व को अपनाकर पवित्र बनने की कोशिश जारी रखनीचाहिए । गाँधी जी शुद्ध व्यतिरेकी एवं आत्म शुद्धि चाहते थे । उनका कहना था विकास अत्यधिक शांति में ही निहित है । अपने अहिंसा के अस्त्र से वे सारे युद्धों , समस्त संघर्षों को समाप्त कर तथा इन मूल्यों के द्वारा मानव जीवन को प्रगति के पथ पर ले जा नाचाहिए। वे मानवतावादी थे । उनके विचारानुसार चलने में अनेक लाभ है क्योंकि आज की अधिकतर समस्याओं का मूल कारण अशांति, असहिष्णुता है ।

,साहस, दृढ़ता, ईमानदारी करुणा, कर्म के प्रति एकता, अटूट निष्ठा, आचार और व्यवहार, चरित्र पर ध्यान आदि ने गाँधी जी को प्रभावित किया जिससे कीर्तिमान बने । गाँधी जी शाकाहारी सिद्धांत को अपनाया जिसका मूल आधार प्रेम है । सभी प्राणियों से प्यार करना उत्तम गुण है जिसका प्रोत्साहन करते हुए शाकाहारी को अहिंसा के रूप में देखा जाता है । इसका ज्वलंत उदाहरण बकरे की बलि क्यों ? पाठ से समझ सकते हैं ।उनका कथन है कि मनुष्य बकरे से श्रेष्ठ जीव है इसलिए बकरे को बलि करने के पहले देवी के लिए मेरा भोग चढ़ाइए । युवकों को अंध विश्वास की भावना से हटकर अपनी भलाई की ओर सोचने की प्रेरणा तथा किसी भी प्राणी को कोई कष्ट ना पहुँचाने का पाठवेसिखाते हैं ।

उनके विचारों में जाति, धर्म, प्राण, देश, आदि भेद से दूर हटकर समस्त संसार के मानव से एकता और प्रेम स्थापित

RRIJM 2015, All Rights Reserved

करनेकी महत्ता है । भेदभाव सदैव रहता ही है पर आज हमें उसकी मात्रा बढ़ती हुई महसूस होती है । भेद भाव के बिना समस्त प्राणियों से स्नेह तथा उच्च मानवता के साथ रहे तो सबका भविष्य उज्ज्वल है जिससे सारा समूह आदर की दृष्टि से देखेगा। भारतीय शासन भी आज इसी मंत्र को अपनाकर समस्त भारत को एक क्षत्र में लाने की कोशिश कररहा है ।

महात्मा गाँधी का मानना हैकि जिस प्रकार त्याग और बलिदान कीभावना अत्याचार, अन्याय के खिलाफ सत्याग्रह आदि राष्ट्र हित में हाँथ बाटता है वैसे ही संयुक्त परिवार युवकों में त्याग मनोभावनाको बढ़ता है ।स्वार्थतता छोड़कर सब कार्य जब त्याग भावना सहित करें तो परिवार, समाज और राष्ट्र का कल्याणहोगा।अहंकार को जन्म देने वाली अस्पृश्यता,जाति एवं वर्ण व्यवस्था को पाप और अधर्म की संज्ञा गाँधी जी ने दी है ।उन्होंनेकितना सही कहा है अधिकांश समस्याओं का मूल कारण ये ही है ।उन्होंनेजन्म के आधार पर न मानकर कर्म के आधार पर व्यक्ति की प्रतिष्ठा को स्वीकार किया है और निम्न स्तर के लोगों की सेवा की उद्घोषणाकी है। युवाओं के मन में जाति एवं वर्ण व्यवस्था को पनपने नहीं देना एवं इसे जड़ से निकलना भी जरूरी है ।

दुनिया के लिए गाँधी जी जो अमूल्य सिद्धांत छोड़ गए ,जैसे खादी प्रचार आजादी, विश्वास आदि इन्हें अपनी कसौटी में कस कर लोग सफलता पासकते हैं ।

और इन पर चलना युवकों अपना का कर्तव्य समझनाचाहिए। आजकल कईयुवक युवतियां (कॉलेज के छात्र –छात्राएं) खादी वस्त्र पहन कर कालेज जाते हैं जिससे अनेक जुलाहों के जीवन में उज्ज्वलता आ गई । कई ग्रामीण जीवन गुजरने की इच्छा प्रकटकरते हैं , क्योंकि वैज्ञानिक युग में पाश्चात्य संस्कृति अपना कर बहुत अनुभव कर चुके हैं , यानि आज का जीवन रोग ग्रस्त, अस्वस्थ एवं पीड़ित है । तात्पर्य है इससे बचकर रहना कठिन है ।

गाँधी जी के सिद्धांतों में धार्मिक सहिष्णुता और सहन शीलता की भरमार था ।बैरिस्टर बनने के लिए विलायत जाते वक्त अपनी माता से जो तीन प्रतिज्ञाएँउन्होंने ली थीं उन्हें अंत तक निभाया ।फैशन की ओर थोड़ा सा झुकाव हुआ था लेकिन उन्हें महसूस होने लगा कि रचनात्मक कार्य को चाहने वाले फैशन की ओर झुकेंगे तो अपने उद्देश्य और रचनात्मक कार्य से हट जायेंगे , खैर ऐसे गुणों के द्वारा आज के युवकों से भी हमारा देश शिखर छूएगा ।

वर्तमान में नौकरी की तलाश में लोग मर मिटते हैं जबकि आहर्ता होतो हजारों नौकरियां समक्ष में है । नौकरी की समस्या विश्वरूप बन बैठी है । एक तरफ आबादी बढ़ रही है । युवकों को अपनी शक्ति को रचनात्मक कार्य में लगाने की आवश्यकता है । गाँधी के विचार भी यही हैं । वे जेल गए, जेल से छूटने के बाद सांप्रदायिक दंगों (हिन्दू-मुसलमान उपद्रव)कोसदा के लिए शांत करने के निमित्त उपवास की घोषणा की, जिसकारण दोनों संप्रदायोंके नेताओं का ध्यान साम्प्रदायिक दंगों से शांति की ओर हुआ।हम सब भारतवासी हैं बाकी सब विषय बाद में ऐसी भावना युवकों में होनी चाहिए। अंत में हम कहना चाहेंगे कि :-

उठो मेरे शेरों
इस भ्रम को मिटा दो
कि तुम निर्बल हो
तुम एक अमर आत्मा हो
विश्वास कभी मत छोड़ो
स्वच्छंद जीव जो
धन्य हो, सनातन हो
तुम तत्व न हो
न ही शरीर हो
तत्व तुम्हारा सेवक हो
तुम तत्व के सेवक नहीं हो
बस इनकेलिए
अपनाओ गाँधी के विचारों को

संदर्भसूची:

1. हिन्दस्वराज – लेखक : महात्मागांधी (1909)प्रकाशक-रामकृष्णमठ, लखनऊ.
2. मेरे सपनों का भारत महात्मागांधी, प्रकाशक-सरस्वती दिल्ली.
3. ("एक आत्मकथा या सत्य के साथ मेरे प्रयोग की कहानी,"महात्मागांधी,कमलप्रकाशन, आगरा.
4. रचनात्मक कार्यक्रम- इसका अर्थ और स्थान,रुचिप्रकाशन, भोपाल.

RRIJM 2015, All Rights Reserved